अध्याय 3: अतीत में दबे पाँव

विषय-सूची

1 प्रश्नावली · 6 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 अभ्यास 6 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — अभ्यास

प्रश्न 1

सिंधु-सभ्यता साधन-संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे?

हल

पाठ के अनुसार मुअनजो-दड़ो सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा और साधनों एवं व्यवस्थाओं की दृष्टि से सबसे समृद्ध शहर माना गया है — फिर भी उसमें भव्यता का आडंबर नदारद है।

अन्य प्राचीन सभ्यताओं में राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले भव्य महल, उपासना-स्थल, विशाल मूर्तियाँ और पिरामिड मिलते हैं। इसके विपरीत हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रसाद मिले, न मंदिर और न राजाओं-महंतों की समाधियाँ।

यहाँ के मूर्तिशिल्प छोटे हैं, औजार भी छोटे हैं। मुअनजो-दड़ो के 'नरेश' की मूर्ति के सिर पर जो 'मुकुट' है, वह इतना छोटा है कि उससे छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

यहाँ की नावें बनावट में मिस्र की नावों जैसी होते हुए भी आकार में उनसे छोटी रहीं।

अजायबघर में प्रदर्शित वस्तुओं में औजार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं — यह भी आडंबरहीनता और अहिंसक सभ्यता का प्रमाण है।

इसीलिए लेखक ने इसे आज के मुहावरे में 'लो-प्रोफ़ाइल' सभ्यता कहा है — लघुता में भी महत्ता अनुभव करने वाली संस्कृति।

उत्तर: सिंधु सभ्यता में साधन-संपन्नता थी, पर भव्य महल, मंदिर, विशाल मूर्तियाँ या पिरामिड नहीं मिले। छोटे मूर्तिशिल्प, छोटे औजार, लघु 'मुकुट' और हथियारों का अभाव — यह 'लो-प्रोफ़ाइल' किंतु कला-समृद्ध सभ्यता की पहचान है।

प्रश्न 2

'सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

हल

अन्य प्राचीन सभ्यताओं में कला का विकास राजाओं या धार्मिक संस्थाओं के संरक्षण में हुआ — यानी शासक या पुजारी वर्ग के लिए, उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए।

सिंधु सभ्यता में न भव्य राजप्रसाद मिले, न मंदिर, न राजाओं की विशाल प्रतिमाएँ। यहाँ की कला आम जनजीवन में रची-बसी थी।

सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला और नगर-नियोजन के अलावा धातु और

पत्थर की मूर्तियाँ, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य-वनस्पति-पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप — ये सब साधारण जीवन की जरूरतें और अभिव्यक्तियाँ थीं।

इन सबने सिंधु सभ्यता को 'तकनीक-सिद्ध' से ज्यादा 'कला-सिद्ध' जाहिर किया।

एक पुरातत्त्ववेत्ता के मुताबिक यहाँ का सौंदर्य-बोध किसी राजा या देवस्थान की जरूरतों से पैदा नहीं हुआ, बल्कि समाज ने स्वयं इसे जन्म दिया और पोषित किया। इसीलिए यहाँ आकार की भव्यता की जगह कला की भव्यता दिखाई देती है।

उत्तर: सिंधु सभ्यता में कला राजाओं या धर्म के लिए नहीं, सामान्य जन-जीवन के लिए थी। मृद्-भांड, मुहरें, मूर्तियाँ, आभूषण, खिलौने — ये सब समाज की रुचि और जरूरत से उपजे थे। इसीलिए इस सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषित माना गया।

प्रश्न 3

पुरातत्त्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि — 'सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।'

हल

पाठ में ऐसे कई पुरातात्त्विक चिह्न दिए गए हैं जो इस निष्कर्ष की ओर संकेत करते हैं:

1. हथियारों का अभाव: अजायबघर में प्रदर्शित वस्तुओं में औजार तो हैं, पर हथियार एक भी नहीं। मुअनजो-दड़ो से हड़प्पा तक और हरियाणा तक समूची सिंधु सभ्यता में हथियार उस तरह कहीं नहीं मिले जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं।
2. नगर-नियोजन और एकरूपता: नगर योजना, वास्तुशिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ-सफाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता थी — जो बिना किसी केंद्रीय बाध्यकारी शक्ति के, समझ और सहमति से ही संभव है।
3. कोई राजप्रसाद या मंदिर नहीं: हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रसाद मिले, न मंदिर। प्रभुत्व या दिखावे के तेवर का नदारद होना संकेत देता है कि यहाँ सैन्य सत्ता या धार्मिक शक्ति का वर्चस्व नहीं था।
4. अनुशासन पर टिकी व्यवस्था: विद्वान मानते हैं कि वहाँ अनुशासन जरूर था, पर वह ताकत के बल पर नहीं था। संभवत: यहाँ कोई सैन्य सत्ता नहीं थी — फिर भी पूरे शहर में अद्भुत अनुशासन था।
5. ढकी हुई नालियाँ और स्नानघर: हर घर में स्नानघर, ढकी हुई नालियाँ, महाकुंड जैसी जन-स्वास्थ्य व्यवस्थाएँ — यह समझ और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना से ही संभव हुईं, बाध्यकारी बल से नहीं।

उत्तर: हथियारों का अभाव, भव्य राजप्रसाद या मंदिर का न होना, नगर-नियोजन की एकरूपता, ढकी नालियाँ और महाकुंड जैसी जन-व्यवस्थाएँ — ये सब प्रमाण हैं कि सिंधु सभ्यता ताकत से नहीं, समझ और सामूहिक सहमति से अनुशासित थी।

प्रश्न 4

'यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ़ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं।' इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है?

हल

लेखक ओम थानवी मुअनजो-दड़ो की खंडहर हो चुकी इमारतों में उन टूटी-फूटी सीढ़ियों का वर्णन करते हैं जो अब किसी मंजिल तक नहीं पहुँचातीं — वे आकाश की ओर अधूरी लटकी हैं।

शाब्दिक अर्थ में सीढ़ियाँ भले ऊपर नहीं ले जातीं, पर उन पर खड़े होकर जो अनुभव होता है वह किसी ऊँचे भौतिक स्थान से भी गहरा है।

लेखक का आशय यह है कि उन टूटी सीढ़ियों पर खड़े होकर हम पाँच हजार वर्ष के इतिहास को नहीं — बल्कि उससे भी परे की मानव-सभ्यता और उसकी निरंतरता को देख-महसूस कर सकते हैं।

यह एक काव्यात्मक कथन है — 'दुनिया की छत' अर्थात् सभ्यता का सर्वोच्च बिंदु, जहाँ से इतिहास के पार झाँकने का अर्थ है — इतिहास से परे कालातीत मानवीय भावनाओं, जिजीविषा और निरंतरता की अनुभूति।

यह खंडहर केवल नष्ट हुई इमारतें नहीं हैं; वे पाँच हजार साल पुरानी जिंदगियों, उनके सपनों और उनकी दैनंदिन दुनिया की जीती-जागती स्मृति हैं। सीढ़ी की हर दरार एक कहानी कहती है।

उत्तर: टूटी सीढ़ियाँ भले किसी मंजिल तक न पहुँचाएँ, पर उन पर खड़े होकर पाँच हजार वर्षों के इतिहास से परे — सभ्यता की निरंतरता और मानवीय जिजीविषा — की अनुभूति होती है। लेखक का आशय है कि खंडहर भी इतिहास नहीं, अतीत के जीवंत साक्षी हैं।

प्रश्न 5

टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं — इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

हल

खंडहरों को सामान्यत: केवल ऐतिहासिक साक्ष्य माना जाता है — बीती सभ्यताओं की जानकारी का स्रोत। लेकिन लेखक उनमें कुछ और भी देखते हैं।

मुअनजो-दड़ो में लेखक जब टूटे-फूटे घरों में घूमते हैं, तो उन्हें हर घर में उन लोगों की उपस्थिति महसूस होती है जो कभी वहाँ रहते थे — रसोई की खिड़की पर गंध, सुनसान मार्ग पर बैलगाड़ी की रफ़न-झुन, घर की देहरी पर रखा पाँव।

खंडहर न केवल नगर-नियोजन या पुरातत्त्व की जानकारी देते हैं, बल्कि उन सामान्य लोगों के रोजमर्रा के जीवन — उनके सुख-दुख, आदत और संस्कार — का भी दस्तावेज हैं जिनका कोई लिखित इतिहास नहीं है।

कुलधरा के उदाहरण से भी लेखक यही बात कहते हैं — लोग गए, पर वक्त वहीं रह गया, 'खंडहरों ने उसे थाम लिया।'

इस प्रकार खंडहर 'धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों' — यानी उन क्षणों के साक्षी हैं जो न कहीं दर्ज हुए, न किसी ने जानबूझकर संजोए — फिर भी पत्थर और मिट्टी ने उन्हें थाम रखा है।

उत्तर: खंडहर केवल सभ्यता के ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं होते — वे उन सामान्य जनों के जीवन, आदतों और भावनाओं के भी दस्तावेज होते हैं जिनका कोई लिखित इतिहास नहीं। 'धड़कती जिंदगियों के अनछुए समय' वहाँ की हर दीवार, देहरी और खिड़की में जीवित रहते हैं।

प्रश्न 6

नदी, कुएँ, स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लेखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

हल

लेखक का प्रश्न सार्थक है और उत्तर उनके पक्ष में है — सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' कहना उचित है।

तर्क 1 — महाकुंड: मुअनजो-दड़ो का प्रसिद्ध महाकुंड सिंधु सभ्यता के अद्वितीय वास्तुकौशल का प्रमाण है। यह करीब चालीस फुट लंबा, पच्चीस फुट चौड़ा और सात फुट गहरा था। इसे धार्मिक अनुष्ठान और सामूहिक स्नान के लिए बनाया गया था। इसके तल और दीवारों में ईंटों के बीच रिसाव रोकने के लिए चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ; पार्श्व की दीवारों के साथ बनी दूसरी दीवार में सफेद डामर का प्रयोग है।

तर्क 2 — सात सौ कुएँ: मुअनजो-दड़ो में अकेले सात सौ के करीब कुएँ थे। सिंधु घाटी सभ्यता संसार की पहली ज्ञात संस्कृति है जिसने कुएँ खोदकर भू-जल तक पहुँचना सीखा।

तर्क 3 — हर घर में स्नानघर: प्रत्येक घर में स्नानघर था। घरों से पानी या मैल की नालियाँ बाहर की हौदी तक आती थीं और फिर नालियों के जाल से जुड़ जाती थीं।

तर्क 4 — बेजोड़ जल-निकासी व्यवस्था: ढकी हुई नालियाँ मुख्य सड़क के दोनों तरफ समांतर बनी थीं। पक्की ईंटों से बनी और ईंटों से ढकी ये नालियाँ उस दौर में अद्वितीय थीं — पानी-निकासी का ऐसा सुव्यवस्थित बंदोबस्त पहले के किसी ज्ञात इतिहास में नहीं मिलता।

इन सभी तथ्यों से स्पष्ट है कि जल इस सभ्यता के जीवन का केंद्र था — आस्था से लेकर स्वच्छता तक सब कुछ जल के इर्द-गिर्द था।

उत्तर: लेखक के पक्ष में — महाकुंड, सात सौ कुएँ, हर घर में स्नानघर और बेजोड़ ढकी-नालियाँ प्रमाण हैं कि जल इस सभ्यता के जीवन, आस्था और स्वच्छता सभी का केंद्र था। सिंधु घाटी सभ्यता को 'जल-संस्कृति' कहना उचित है।